ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 41-44**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

प्रवीण कुमार सिंह, 2. डॉ0 सत्यवह द्विवेदी

शोध अध्येता, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, 2. सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, हलीम मुस्लिम पी.जी. कॉलेज, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, (उ0प्र0) भारत

Received-16.07.2025, Revised-23.07.2025, Accepted-30.07.2025 **E-mail : singhpraveen150681@gmail.com**

सारांशः ***समावेशी शिक्षा सिर्फ एक शिक्षा प्रणाली नहीं है बल्कि एक सामाजिक क्रांति है जो हर बच्चे को समान अवसर और सम्मान देने की बात करती है। इसका महत्व सिर्फ विशेष जरूरतों वाले बच्चों का सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे समाज को बेहतर बनाने का काम करती है। इसे प्राप्त करने में शिक्षकों की महती भूमिका होती है। शिक्षकों को सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पिछड़े तथा विभिन्न आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशीलता एवं सकारात्मक अभिवृत्ति जरूरी है, जो न केवल छात्रों के व्यक्तिगत विकास में मदद करती है, बल्कि यह शिक्षकों को एक बेहतर पेशेवर बनाती है, और एक अधिक न्यायपूर्ण और संवेदनशील समाज की नींव रखती है।***

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों का शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है। इस अध्ययन में मात्रात्मक शोध विधि के अन्तर्गत विवरणात्मक सर्वे अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। प्रतिदर्श के रूप में माध्यमिक विद्यालय स्तर के शिक्षक–शिक्षिकाओं को सम्मिलित किया गया। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष से पता चलता है कि सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों, विज्ञान एवं कला वर्ग के विषयों तथा पुरूष शिक्षक एवं महिला शिक्षिकाओं का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

कुंजीभूत शब्द– माध्यमिक विद्यालय, शिक्षक, समावेशी शिक्षा, अभिवृत्ति, विवरणात्मक सर्वे, प्रतिदर्श, समतामूलक, समरसता ।

प्रस्तावना – भारतीय समाज की पहचान विविधता में एकता है और बिना शिक्षा के यह कार्य असम्भव है। समतामूलक एवं सामाजिक समरसता को बनाने में शिक्षा मुख्य भूमिका का निर्वहन करती है। ऐसे में शिक्षा व्यवस्था इस प्रकार होनी चाहिए कि समाज के विभिन्न आवश्यकता वाले तथा सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक रूप से पिछड़े सभी विद्यार्थियों को सामान्य विद्यालयी शिक्षा में समावेशित करें। समावेशन के द्वारा ही छात्र और छात्राओं में आत्म विश्वास, आत्म सम्मान, सकारात्मक सोच एवं प्रभावी सम्प्रेषण आदि गुण स्वयं विकसित हो जाएंगे। समावेशी शिक्षा की संकल्पना का विकास वंचित विद्यार्थियों को सामान्य विद्यालयों में समावेशन के द्वारा किया जा रहा है। समावेशी शिक्षा की सफलता औपचारिक रूप से शिक्षा जगत में सक्रिय रूप से कार्य करने वाले शिक्षक और शिक्षिकाओं पर निर्भर करती है।

समावेशी शिक्षा एक आदर्श समाज की नींव रखती है। यह न केवल विशेष बच्चों को मुख्य धारा में शामिल करती है, बल्कि सामान्य बच्चों को भी विविधता को स्वीकार करने और सम्मान करने की सीख देती है।

यूनेस्को के अनुसार : "समावेशी शिक्षा एक प्रक्रिया है जो सभी बच्चों, युवाओं, वयस्कों की विविध आवश्यकताओं को सम्बोधित करती है। इसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी को सीखने में पूर्ण भागीदारी का अवसर मिले।"

सैमुअल किर्क के अनुसार : "बच्चों को सामान्य कक्षा में एक साथ लाने के रूप में परिभाषित किया है, ताकि वे अपने सार्थियों के साथ बातचीत और सीखने के अनुभवों को साझा कर सके। उनके अनुसार, यह बच्चों को सामाजिक, कौशल विकसित करने और समाज का एक अभिन्न अंग बनाने में मदद करता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि समावेशी प्रक्रिया में विशिष्ट आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की मुख्य धारा में लाने के लिए तथा सामाजिक कौशल विकसित करने के लिए विद्यालय सुधार व्यवस्था में परिवर्तन तथा विद्यालय तक सभी की पहुँच जैसे महत्वपूर्ण बातों को सम्मिलित किया गया है। इन सब कार्यों को करने के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षकों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है, ऐसे में शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति जानना महत्वपूर्ण हो जाता है। अतः इस शोध पत्र के माध्यम से शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को समझने का प्रयास किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन – जोगेश्वरी दास व अन्य (2019) ने "ए स्टडी ऑन एटीट्यूड ऑफ प्रोस्पेक्टिव टीचर्स एजुकेशन टुवर्ड्स इंक्लूसिव एजुकेशन" विषय पर अध्ययन किया। इस शोध में सेवापूर्ण शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया। प्रतिदर्श के रूप में एकीकृत बी.एड. व एम.एड. के 56 सेवापूर्ण शिक्षक–शिक्षिकाओं का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से किया गया। उपकरण के रूप में स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया। इस अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि अधिकांश सेवापूर्ण शिक्षक–शिक्षिकाओं का समावेशी शिक्षा के प्रति मध्यम अनुकूल अभिवृत्ति है साथ ही समावेशी शिक्षा के प्रति सेवापूर्ण शिक्षक–शिक्षिकाओं के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तिवारी सुनीता (मई 2019) "कोटा जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन" के द्वारा माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों का अध्ययन किया गया। इस शोध में कोटा जिले के 100 शिक्षकों का चयन उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा किया गया। उपकरण के रूप में स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया। शोध सांख्यिकी के अन्तर्गत मध्यमान, मानक विचलन, टी–मूल्य का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि समावेशी शिक्षा के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति के अध्ययन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

गोपाल डे एवं वीका (अगस्त 2023) ने "समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन" के अन्तर्गत सेवापूर्ण और सेवारत् शिक्षकों की अभिवृत्ति की जांच की गई। इस शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया। प्रतिदर्श के रूप में बंटिडा जिले (पंजाब) के प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के 50 सेवारत् शिक्षक और 46 एम.एड. सेवापूर्ण शिक्षक शामिल किए गए। उपकरण के रूप में डॉ0 विशाल सूद एवं डॉ0 आरती आनन्द की अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष से यह प्राप्त होता कि अधिकांश शिक्षकों में समावेशी शिक्षा के प्रति मध्यम से लेकर औसत से अधिक अनुकूल दृष्टिकोण हैं।

अध्ययन का उद्देश्य – प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता के द्वारा निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं :

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

1. सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान एवं कला वर्ग के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पना –

1. सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान एवं कला वर्ग के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि – प्रस्तुत अध्ययन मात्रात्मक शोध विधि के अन्तर्गत विवरणात्मक सर्वे पद्धति पर आधारित है।

प्रतिदर्श – प्रतिदर्श के रूप में कानपुर नगरके किदवई नगर, शास्त्री नगर, सदर (कल्यानपुर) विकास खण्ड में स्थित 128 शिक्षक/शिक्षिकाओं का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि के द्वारा किया गया।

शोध प्रयुक्त उपकरण – प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया। अभिवृत्ति मापनी की विश्वसनीयता .85 है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी – आंकड़ों के विश्लेषण के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया, जिसमें मध्यमान एवं मानक विचलन ज्ञात किया गया। इसके साथ–साथ दो चरों के मध्य अन्तर का विश्लेषण करने हेतु (ज.ज्मेज) का उपयोग किया गया।

आंकड़ों की व्याख्या एवं विश्लेषण –

उद्देश्य–01 : सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पना–01 : सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका–01

सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की तुलना।

चर	मध्यमान	मानक विचलन	N संख्या	D f	टी–मान
सरकारी विद्यालय शिक्षक	143.40	11.01	64	126	.225
निजी विद्यालय शिक्षक	142.92	13.01	64		

सार्थकता स्तर .05

ग्राफ–01

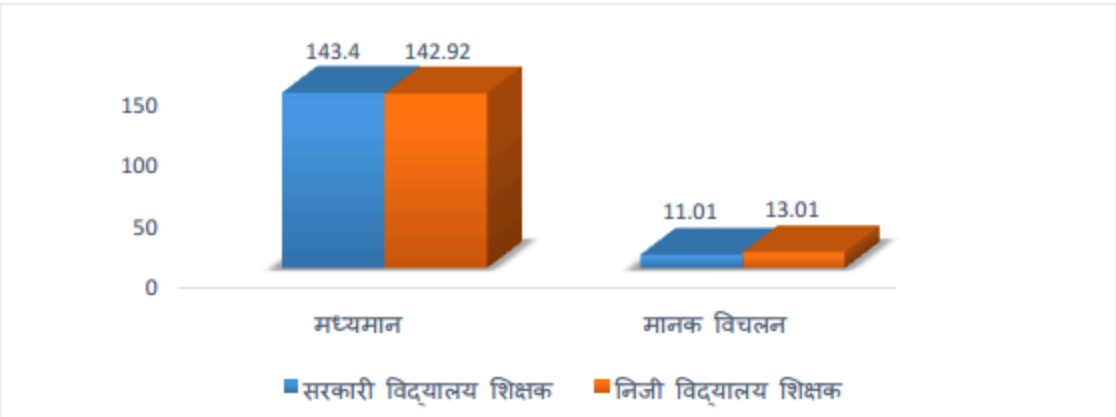

निष्कर्ष – उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से स्पष्ट है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 143.40 एवं मानक विचलन 11.01 है, जबकि निजी माध्यमिक शिक्षकों का मध्यमान 142.92 एवं मानक विचलन 13.01 है। सभी का आवृत्ति अंश (Df) 126 है। सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तुलना करने पर टी–मान .225 प्राप्त हुआ। यह टी–मान .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है क्योंकि इसलिए पाप्त टी–मान सारणी मान 1.98 से कम है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना "सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" को स्वीकृत किया जाता है।

उद्देश्य–02 : पुरूष एवं महिला शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

परिकल्पना–02 : माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका–02

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष व महिला शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की तुलना

चर	मध्यमान	मानक विचलन	N संख्या	D f	टी–मान
शिक्षक	144.95	14.09	64	126	.225
शिक्षिका	147.97	9.55	64		

सार्थकता स्तर .05

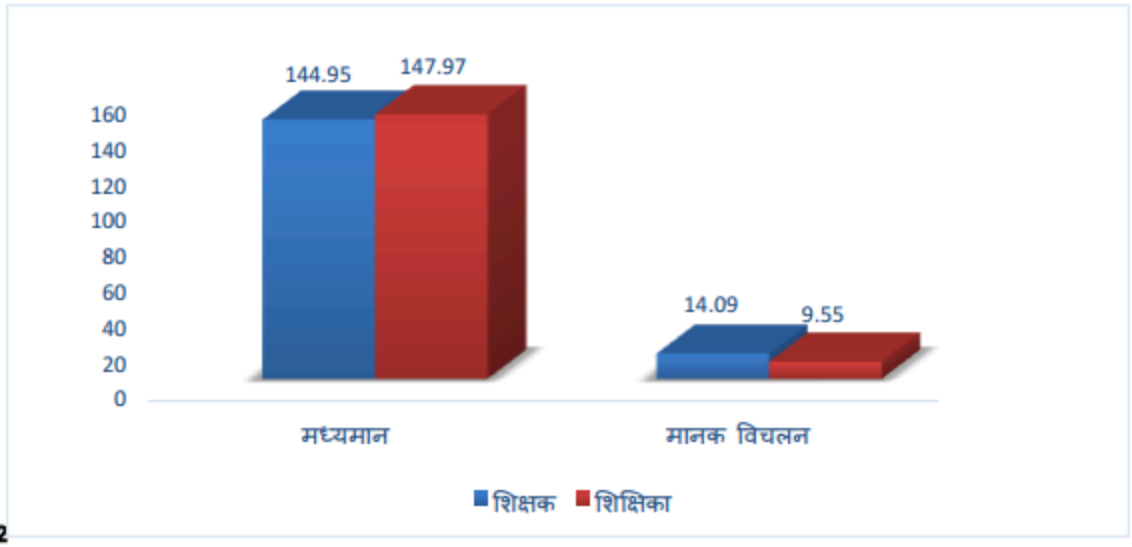

ग्राफ–02

निष्कर्ष – उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 144.95 तथा मानक विचलन 14.09 है जबकि शिक्षिकाओं का मध्यमान 147.37 तथा मानक विचलन 9.55 है तथा सभी का आवृत्ति अंश (Df) 126 है। पुरूष एवं महिला शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तुलना करने पर टी–मान .225 प्राप्त हुआ। यह टी–मान .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है, क्योंकि प्राप्त टी–मान सारणी मान 1.98 से कम है। इससे स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परिकल्पना "माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" को स्वीकृत किया जाता है।

उद्देश्य–03 : माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान एवं कला वर्ग के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पना–03 : माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान एवं कला वर्ग के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका–03

माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान एवं कला वर्ग के शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की तुलना

चर	मध्यमान	मानक विचलन	N संख्या	D f	टी–मान
विज्ञान	146.14	11.12	64	126	.92
कला वर्ग	146.18	12.94	64		

सार्थकता स्तर .05

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

ग्राफ–03

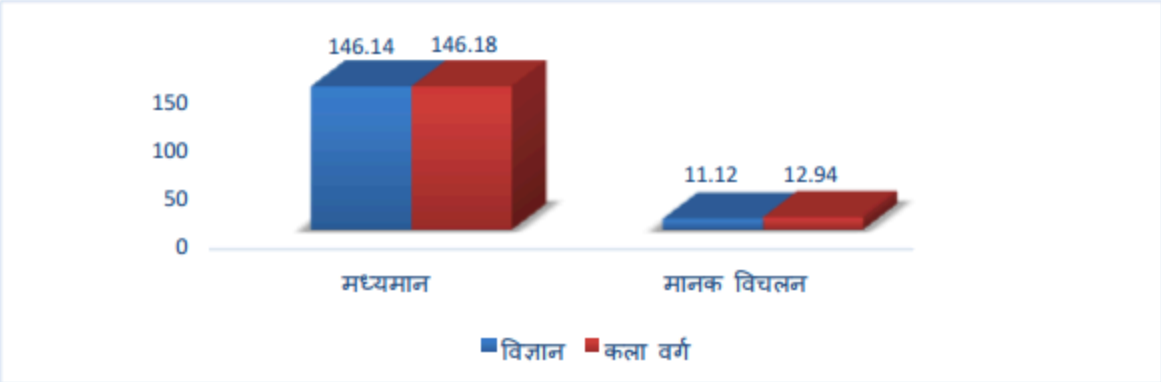

उपरोक्त तालिका 03 एवं ग्राफ संख्या–03 से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान विषय के शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मान 146.14 एवं मानक विचलन 11.12 है तथा कला वर्ग विषय के शिक्षकों का मध्यमान 146.18 तथा मानक विचलन 12.94 है तथा सभी का आवृत्ति अंश (Df) 126 है। विज्ञान वर्ग एवं कला वर्ग के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तुलना करने पर टी–मान .92 प्राप्त हुआ यह टी–मान .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है, क्योंकि प्राप्त टी–मान सारणीमान 1.98 से कम है। इससे स्पष्ट होता है कि विज्ञान एवं कला वर्ग में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना "माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान एवं कला वर्ग विषयों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" को स्वीकृत किया जाता है।

शोध निष्कर्ष – सांख्यिकीय आधार पर परिकल्पनाओं को स्वीकृत या अस्वीकृत किया गया। इस प्रकार परिकल्पनाओं से सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण करने से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए :

सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य में समावेशी शिक्षा को लेकर किसी प्रकार के विभेद नहीं है, वे समान रूप से समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक भाव रखते हैं।

1. माध्यमिक विद्यालयों में पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अर्थात् पुरूष एवं महिला शिक्षकों की बराबर अभिवृत्ति है।
2. विज्ञान एवं कला वर्ग विषयों के आधार पर शिक्षकों में समावेशी शिक्षा को लेकर कोई विभेद नहीं है, अर्थात् विज्ञान वं कला वर्ग के शिक्षक समान रूप से समावेशी शिक्षा की अभिवृत्ति को समझते हैं।

उपरोक्त निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर न होने का प्रमुख कारण शिक्षकों का एक समान प्रशिक्षण एवं समान वातावरण के काम करना हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, एस.पी. (2013). अनुसंधान संदर्शिका संप्रत्यय कार्यविधि व प्रविधि इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
2. राय, पारसनाथ, सी.पी. (2013). अनुसंधान परिचय आगरा : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
3. झा, एम.एम. (2005). समावेशी शिक्षा दृष्टिकोण और प्रक्रियाएं (एन.नदीम, अनुवाद). नई दिल्ली प्रकाशन संस्थान (2013).
4. भारतीय एस. शर्मा, ए.के. (जुलाई–दिसम्बर 2019). समावेशी शिक्षा के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान व कला संकाय के अध्यापकों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 38(2) 4–7–55.
5. Dash, Jogeswari, Purohit, S., Padhy S., Hoa S. (2019), A, Study on Attitude of prospective teacher education towards in clusior education, Int S Appl Res 2019; 5(5) : 22-26.
6. तिवारी, सुनीता (मई–2019), कोटा जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, श्रंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका, 6(9) 9–11, ISSN-2349-980x.
7. डे, गोपाल एवं बीका (अगस्त 2023),"समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन"।

*****